Vol 3 Issue 11 Dec 2013

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-11, Dec-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

अज्ञेय – एक संवेदनशील या यावर

सुरेशकुमार केसवानी
एम.ए.,बी.एड,एम.फिल.,पीएच.डी अधिव्याख्याता, वि ाग प्रमुख हिन्दी सीताबाई कला महाविद्यालय,अकोला.

सारांश: अज्ञेय के यात्रा वृत्तांत उनकी सांस्कृतिक सजगता एवं निरीक्षण शक्ति के उत्तम निदर्शन हैं। इतिहास, भूगोल, दर्शन, चिंतन तथा संस्कृति को समेटने में उनकी रचनाएँ काफी समर्थ वे बाह्ययात्राओं की तरह अंतर्यात्राएँ भी काफी करते रहते रहे।

फ्रांस के वर्णन में वहाँ के बहुआयामी जीवन को सामने रखा है। वहाँ के जीवन को श्रेष्ठता के साथ खोखलेपन का भी परिचय दिया है। यूरोप का जीवन अज्ञेय को काफी यांत्रिक और अधिक गतिशील लगा। वहाँ दौड ही दौड है। यूरोपीय भ्रमण में अज्ञेय ने भारतीय आगे दूसरे देशों को नहीं, हमसे आरम्भ होने वाली आगे की दिशा, आगे की।'' अज्ञेय ने हॉलैण्ड का वर्णन करते हुए प्राकृतिक सौंदर्य, स्थापत्य, संग्रहालय, व्यापार तथा जीवन का परिचय दिया है।

लंदन, रोम, पेरिस आदि के जीवन तथा संस्कृति को बडी बारीकी से अज्ञेय ने समझा है। चंद शब्दों में शहर व जनता की पूरी संवेदना अभिव्यक्त की गई है। 'एक सैलानी की तरह मात्र प्राकृतिक दृश्यों के आनंद को ही दृष्टि में रखकर घूमते चले जाना अज्ञेय का मंतव्य नहीं था,...। उनकी संवेदना में अपने पिता से विरासत में मिले पुरातात्त्विक संस्कार तो थे ही, अपनी गहरी साहित्यिक सांस्कारिता थी ही, परन्तु इससे आगे बढकर एक समग्र सांस्कृतिक दृष्टि भी थी।

प्रस्तावना –

गद्य की वि िन्न विधाओं का विकास आधुनिक काल में हुआ ळें यात्रा साहित्य उनमें एक प्रमुख एवं गणनीय विधा बन गया है। जोगद्य की एक अकाल्पनिक विधा है। डायरी, आत्मकथा, जीवनी,रेखाचित्र आदि इसी श्रेणी की विधाएँ हैं। ऐसी विधाओं में यथार्थ को ही महत्त्व दिया जाता है। मगर ाषिक सर्जनात्मकता सेसंवेदनशील प्रस्तुतिकी जातीहै। हिन्दी में यात्रा लेखन की परम्परा काफी पुरानी है जो आधुनिक काल के प्रारम् में ही शुरू हुई थी। ारतेन्दुने अपनी पत्रिका' कवि वचन सुधा' में अपने यात्रा संबंधी निबंधों को पहली बार प्रकाशित कियज्ञं लखनऊ(1871), हरिद्वार(अप्रैल1871),जबलपुर(जुलाई,1872)आदि इसके शीर्षक रहे हैं। ारतेन्दु युग से लेकर अब तक सैकडों यात्रा साहित्य लिखे गये। राहुल सांकृत्यायन,यशपाल,अज्ञेय,विष्णु प्र ाकर,निर्मल वर्मा,दिनकर,श्रीकांत वर्मा,सर्वेश्वर दयाल सक्सेना,गोविन्द मिश्र,राजेन्द्र अवस्थी,रामदर शमिश्र,प्रदीप पंत,इंदु जैनआदि कई लेखक इस दिशा में काफी प्रतिष्ठा पाये हैं। यात्रा वृत्त के रूप में अज्ञेय की दो रचनाएँ काफी मशहूर हैं'अरे यायावर रहेगा याद'(1953)और'एक बूँद सहसा उछली'(1960) ।फिरकई यात्रियों की रचना ओंका अज्ञेयने'जनजनक जानकी' नामसे 1984 में संपादित किया। इस संपादित ग्रंथ में पटना,वैशाली,सीतामढी,जनकपुर,वीर गंज मोनिहारी,वाल्मी किनगर,कुशीनगर,पगहर,अयोध्या, नंदिग्राम, कलाकांकर,प्रयाग,चित्रकूटआदि कई यात्रा ओंके वृत्तांत हैं।

यात्रा वृत्तांतों में सांस्कृतिक सजगता–

अज्ञेय के यात्रा वृत्तांत उनकी सांस्कृतिक सजगता एवं निरीक्षण शक्ति के उत्तम निदर्शन हैं। इतिहास,गोल,दर्शन,चिंतन तथा संस्कृति को समेटने में उनकी रचनाएँ काफी समर्थ हैं।'अरे यायावर रहेगा याद'में उन्होंने यह प्रमाणित किया है कि'बहता पानी निर्मला'। अर्थात् जीवन पानी की तरह बहता रहेतो स्वच्छ होता है। अनु व की प्रामाणिकता तथा अनु ूति की गहराई उनकी रचना ओंको विशिष्टता प्रदान करती है।

अरे यायावर रहेगा याद' में भारतीय यात्रा ओंका मनमोहक चित्र है तो'एक बूँद सहसा उछली' में यूरोप का वर्णन मिलता है। अज्ञेयने प्रथम यात्रा कृति की भूमिका में स्वीकार किया है कि उनकी पुरानी यात्राएँ मिथक क सहारे दोहराई जाकर गोल के आयाम में ही नही ं,इतिहास के आयाम में अग्रसरण करती हैं, देश कोनही ं मापतीं,कामको नापती चलती हैं। मिका से स्पष्ट होता है कि वे बाह्ययात्र ओंकी तरह अंतर्यात्राएँ काफी करते रहते रहे।अर्थात यात्रा का जितना स्थूल विस्तार से सम्बद्ध होता है उतना सूक्ष्म मानसिक गोलसे इस शोध प्रपत्र में अज्ञेय का दूसरेयात्रा वृत्तांत'एक बूँद सहसा उछली'के कुछ पहलुओंपर ही दृष्टिपात किया जा रहा है।

'एक बूंद सहसा उछली 'में जिज्ञासा के मार्मिकक्षण–

'एक बूंद सहसा उछली' में अज्ञेय ने अपनी यूरोपीय यात्र को सृजनात्मक रूप प्रदान किया है, जिस में गहरी संवेदनाए वंजिज्ञासा के मार्मिकक्षण मिलते हैं। यूरोप की अमरावती,रोमा से लेकर प्राचीप्रतीचीतकबाई सअध्यायों में वि्त इस वृत्त में रोम, फ्लोरेंस, पेरिस, फ्रांस स्विट्जरलैण्ड, हालैण्ड, लंदन, वेलस, आयरलैण्ड, एडिनबरा, कोपेनहोगन, स्वीडन, जर्मनी आदि दुनिया के महत्त्वपूर्ण इतिहास प्रसिद्ध देशों की यात्राओं का वर्णन मिलता है। इसमें' यूरोप के विन्दिेशों, नगरों, स्थलों का, वहाँ के भौमिक स्वरूप, प्राकृतिक परिवेश का, गलियों, चौराहों, बाजारों का, संग्रहालयों, गिरिजा घरों की कला वस्थापत्यका परिचय है। यूरोप के वर्तमान परिवेश की स्थितियों को समझने, उसके कारण को जानने के प्रयत्न में उसकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमिका संकेत है। विभिन्न देशों या नगरों के नागरिक चरित्र का विश्लेषण है। उनके रहन सहन, शिष्टाचार, सभ्यता, आपसी सम्बन्ध, स्वभाव आदि का उल्लेख है। सम्पूर्ण यूरोप की चेतना को समझ ने की चेष्टा है। उसकी समृद्धि और अंतर्संघर्ष, व्यवस्था और तनाव, यांत्रिक जीवन को रेखांकित करने का प्रयास है। यूरोप के विभिन्न देशों की विशिष्टताओं की पृथक पृथक पहचान है। यूरोप की स्थितियो ंऔर परम्पराओं को भारत के समकक्ष रख दोनों की समानता असमानता को समझने का प्रयास है। ये सी संद लेखक की संवेदना, अनुव, चिंतनया विचार के साथ संपृक्त हो कर

रचना में विवेचित हुए हैं।

यात्रा वृत्तों में बहु आयामी जीवन परिचय–

यात्रा वृत्त के प्रारम्भिक लेखो में इतालवी जीवन का विस्तार पूर्वक परिचय हमें मिलता है। लेखक ने वहाँ के प्रमुख नगरों का परिचय करवाते हुए वहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति की विशिष्टताओं को बारी की सेहमारे सामने प्रस्तुत किया है। स्विट्जरलैण्ड परलिखते हुए चिंतन मनन करनेवाले अज्ञेय का परिचय हमें मिलता है। स्विट्जरलैण्ड का सौंदर्य अपने आपमें मशहूर तो है, किन्तु वहाँ अस्तित्ववादी विचारक कार्लयास्पर्ससे अज्ञेय की भेंट एक विशिष्ट घटना है। दार्शनिक व सामाजिक बातों पर बहस काफी चलती है, साथ ही यहाँ भारत व पश्चिम की तुलना भी देख सकते हैं। इस भेंटपर लेखक ने तन्मयता पूर्वक लिखा है

''चेहरे के भाव के अलावा हर एकव्यक्ति का अपना एक पर्यावरण रहता है जो मानो एक अदृश्यप्र मंडल की तरह व्यक्ति को घेरे रहता है और उसके साथ साथ चलता है। पहली भेंट में ही कभी कभी जोती व्र अनुकूल या प्रतिकूल भाव मन में उदित हो जाते हैं उनका कारण कदाचित् इन प्रभामंडलों का संस्पर्श याटक राहट ही होता है। या स्पर्स से मिलते ही एक स्निग्ध अनुकूल भाव मेरे भीतर उदित हुआ जो बातचीत के अंततक बना रहा। अंतःसंघर्ष यूरोपीय चरित्र का अनिवार्य अंग जान पडता है और उसकी प्रतिच्छा या प्रत्येक यूरोपीय चेहरे पर दिख जाती है, बल्कि जब से यूरोप में उतराथात बसेबरा बरयह प्रश्न मेरे मन में उठता रहा था कि ये सब लोग ऐसे संत्रस्त क्यों दीखते हैं, कौन सा भीतरी संघर्ष इन्हें खाये जा रहा है, किस समस्या ने इन के चित्त को ऐसा विभाजित कर दिया है कि दोनों खण्ड बराबर एक दूसरे सेतने रहते हैं और कि सीस्तर पर भी उनका मेलन हीं होता? या स्पर्स का चेहरा देखते ही पहली बात जो मेर मन में आयी वहय ही थी कि यह चेहरा दोहरा नहीं है, यह व्यक्तित्व विभाजित नहीं है। ''अस्तित्ववादी चिंतक की यह भेंट कई दृष्टियों से काफी महत्त्वपूर्ण है।

फ्रांस के वर्णन में वहाँ के बहु आयामी जीवन को सामने रखा है। वहाँ के जीवन को श्रेष्ठता के साथ खोखलेपन का भी परिचय दिया है। साथ ही दक्षिणी फ्रांस के संन्यासियों के जीवन का तथा धार्मिक विचारों का परिचय मिलता है। फ्लोरेन्स में एक सिपाही ने अज्ञेय को यह समझाया कि अज्ञेयद्वा राप्रयुक्त एक इतालवी शब्द गलत है। उसका सही उच्चारण भी सिपाही ने सिखा दिया (डुंकेगलतडुंक्वेसही)। सिपाही द्वारा भाषा शिक्षण आश्चर्य की बात थी।

यूरोप का जीवन अज्ञेय को काफी यांत्रिक और अधिक गतिशील लगा। वहाँ दौड ही दौड है।' यूरोप की अमरावतीः रोमा' में वे बताते हैं,'' हाँ, यंत्र ने साधन बहुत दिए हैं या मार्ग बहुत खोले हैं या हर व्यक्ति को यह दिखा दिया है कि वहतनिक औरते जहो तो कुछ और पालेगा, तनिक औरते जच ले तो वहीं पहुँच जाएगा और इसलिए सारा जीवन लपककर कुछ पाले ने का, दौड कर कहीं पहुँच जाने का एक अंत हीन प्रयास हो गया है। यदि आकांक्षा की प्रेरणा सेही ऐसा होता तो भी कुछ बात थी,भारतीय दर्शन कहता रहता कि आकांक्षा का अंतन हीं है, पर पश्चिम को अहंकी तृप्ति का गहरा संतोष मिलता रहता। पर बहुत से यूरोपीय पहचान ने लगे हैं कि आकांक्षा की प्रेरणा से भी बलवती निरेयंत्र की अनिवार्यता होती जार ही है, दौड इसलिए नही है कि दौडना चाहते हैं, इसलिए है कि रुक नहीं सकते। अहं को पुष्ट करने के लिए बनायी गई मशीन ऐसी हावी होगई है कि वहव्यक्ति को कुचले दे रही है, वह अपने को अधिका धिकन गण्यपाता हुआ दौड़ रहा है, दौड रहा है और दौड़ता हुआ भी क्रमशः और नगण्य होता जा रहा है।''

यूरोपीय भ्रमण में अज्ञेय ने भारतीय आगे दूसरे देशों को नहीं, हम से आरम्भ होने वाली आगे की दिशा, आगे की।''

अज्ञेय ने हॉलैण्ड का वर्णन करते हुए प्राकृतिक सौंदर्य, स्थापत्य, संग्रहालय, व्यापार तथा जीवन का परिचय दिया है। आयरलैण्ड के वर्णन में वे वहाँ के दे हाती जीवन के साथ लोक परम्पराओं का भी परिचय देते हैं। वेल्स के यात्रा प्रसंग में वहाँ के सांस्कृतिक उत्सव एवं संगीत प्रेम के बारे में बताया है। 'लोकोत्तर' शीर्षक लेख में आविस्को नामक हिम प्रदेशका वर्णन है।' राइन के साथ साथ' में जर्मनी की राइनन दी तथा वहाँ के प्राकृतिक सौंदर्य वर्णित है,साथ ही राजधानी बॉन की यात्रा का भी वर्णन है।' यूरोप का स्नायु केन्द्रः बर्लिन' म युद्धो परांत जर्मनी की दशा का चित्रण है। प्राची और प्रतीची में लेखक ने भारतीय पश्चिमी दर्शन के विभिन्न पहलुओं को सूक्तियों के रूप में लिखा है। ये सूक्तियाँ हमारे चिंतन के लिए ईंधन का काम करती हैं।

लंदन, रोम, पेरिस आदि के जीवन तथा संस्कृति को बडीबारी की से अज्ञेयन समझा है। लंदन के बारे में अज्ञेयने लिखा है,'' जैसे अंग्रे जमजाक करता है और हँसता नही है, या सख्य चाहता है पर बोलता नहीं है वैसे ही लंदन शहर जीना चाहता है पर निश्चलता क तलके नीचे, सुलगता है परराख की मोटीपर्त के नीचे छिपकर''। चंदशब्दों में शहर वजन ताकी पूरी संवेदना अभिव्यक्त की गई है। पूरी सहजता के साथ आगे वे लिखते हैं,'' रोम और पेरिस की तुलना में लंदन कुरूप हैः स्टाकहोम और कोपेन होगन की तुलना में गंदा, बर्लिनकी तुलना में शिथिल और निकम्मा। लेकिन कोई विचित्र कारण है कि लंदन एक सहज घरेलूपन का भाव उत्पन्न करता है। उसमें कोई तडक डकन हीं है, लेकिन उसकी सडकों पर चलते हुए धीरेधीरे यह बोध मनपर छा जाता है कि यह एक महानगर है जो अपने काम में डूबा हुआ है और जानता है कि अधिक शोर मचाने या हडबडा ने से ही काम अधिक नही हो जाता। ''अज्ञेय दूसरे एक प्रसंग में मानते हैं कि काम करन के लिए लंदन अच्छा शहर है।

यात्रा वृत्तों में समग्र सांस्कृतिक दृष्टि –

अज्ञेय की यात्रा कृतियों को पढते समय हमें राज कमल राय का कथन सार्थक लगता है। वे कहते हैं कि' एक सैलानी की तरह मात्र प्राकृतिक दृश्यों के आनंद को ही दृष्टि में रखकर घूमते चले जाना अज्ञेय का मंतव्यन हीं था,.। उनकी संवेदना मे अपने पिता से विरासत में मिले पुरातात्विक संस्कार तोथे ही, अपनी गहरी साहित्यिक सांस्कारि ताथी ही, परन्तु इस से आगे बढकर एक समग्र सांस्कृतिक दृष्टि भी थी। साथ ही सैलानी के रूप में भी बहुत साहसिकता, गहराई और अतिशय संसक्ति के साथ प्रकृति से तादाकार होने की मनःस्थिति में थे।''

जो कच्चा माल लेखक को मिला है उससे कुछ निर्माण करने में वर्षों भी लग सकते हैं, पर अज्ञेय ने अपने यात्रा संस्मरण को आभ्यंतर यात्रा मानते हुए जो पंक्तियाँ पुस्तक के अंतमें (प्राची प्रतीची के पहले) दी हैं, वेक विकी सर्जनात्मक प्रति भाकी प्रखरताए वंसंवेदना की मार्मिकता को अभिव्यक्त करती हैं

एक क्षण भर और रहने दो मुझे अभिभूतः
फिर जहाँ मैंने सँजो कर और भी सबरखी हैं ज्योतिःशिखाएँ
वहीं तुम भी चली जाना
शांत, ते जो रूप।
एक क्षण भर औरः
लम्बे सर्जना के क्षण कभी भी होन हीं सकते।

बूँद स्वाति की श्लेही
बेधती है मर्म सीपी का उसी निर्ममत्वरा से
वज्र जिससे फोडता चट्टान को।
ले ही फिर व्यथा के तम में
बरस पर बरसबी तें
एक मुक्ता रूप को पकते।

संदर्भ संकेत –
अज्ञेय का यात्रा वृत्तांत एक अध्ययन – डॉ. प्रमोद को व प्रत
http://rsaudr-org/
अरेया यावर रहेगा याद (ब्लागलेख) – मानस मुकुलदास
आलोचना –त्रैमासिक (अज्ञेय पर केन्द्रित) सहस्त्राब्दी अंक 41

सुरेशकुमार केसवानी
एम.ए.,बी.एड,एम.फिल.,पीएच.डी अधिव्याख्याता, वि ाग प्रमुख हिन्दी सीताबाई कला महाविद्यालय,अकोला.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net